

पुकारे चलिये रेवा के प्यारे चलिये
मिलेंगे - मिलेंगे -

मिलेंगे खुशियों के नजारे मर्कट के द्वारे चलिये

कल-कल करती धारा बहती-दाई है हरियाली
दादुर, मोर, पपीहा बोले-बोले कोयल काली
अमरकंटक है घाम-सुहाना-दुनियाँ है मतवाली
जल धारा के रूप में आई-करती ये रखवाली

मिलेंगे - मिलेंगे -

मिलेंगे खुशियों के फवारे-मर्कट के द्वारे चलिये

पुकारे चलिये ----

ऊँचे-ऊँचे पर्वत तेरी रोक न पाये धार
ब्रम्हा, विष्णु और महेश भी पाये न तेरा पार
कालों के भी काल हाथ में बैठे हैं महाकाल
मर्कट की शरण में जो आजाये-सुनती हैं तत्काल
बनेंगे - बनेंगे -

बनेंगे बिगड़े काज तुम्हारे-मर्कट के द्वारे चलिये

पुकारे चलिये रेवा के ----

असी कोश की झाड़ी में तो, मर्दाने की ममता पाई है
 ऊँचे पर्वत की शाखा में - वृक्षों की तरुणाई है
 निज भक्तों के ऊपर मर्दाने ने करुणा बरसाई है
 हर पल मर्दाने की याद सताये आँख मेरे भर आई है
 खोलतीं - खोलतीं

खोलतीं मुक्ति के भी द्वारे मर्दाने पुकारे चलिये
 पुकारे-चलिये रेवा के

रत्नासागर की महिमा का कोई पार न पाया है
 देव, मनुज, ब्रह्म, यक्ष ने, रेवा का गुण गाया है
 झूठी माया छोड़ "श्रीबाबाश्री" शरण में तेरी आया है
 निर्विकार और शुद्ध विधि का:

न्याय फल भी पाया है
 सभी को - सभी को -
 सभी को प्यार से निहारे मर्दाने के द्वारे चलिये
 पुकारे-चलिये रेवा के